मुगलकाल में कला एवं स्थापत्य कला की एक नवीन शैली के रूप में विकास

वन्दना कुमारी मिश्रा
शोध छात्रा, इतिहास विभाग
कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा

सारांश

कला और स्थापत्य कला किसी देश तथा समाज की सांस्कृतिक विरासत होती है। वास्तव में कला एवं स्थापत्य कला के विकास द्वारा उस देश की सांस्कृतिक विकास की स्थिति को देखा जाता है। कला और स्थापत्य कला के क्षेत्र में मुगल शासकों की देन अविस्मरणीय है। इन क्षेत्रों में उन्होंने अभिनव प्रयोग किए। उनके भारत में आगमन से पूर्व तुर्क अफगान शासन काल में देशी एवं विदेशी तत्वों के सम्मिश्रण से कला के क्षेत्र में एक नई शैली विकसित हो चुकी थी। शिक्षकों और प्रांतीय सरकारों के द्वारा देश विदेश से आए कलाकारों को आमंत्रित कर अनेक भवनों नगरों मस्जिदों आदि का निर्माण करवाया गया था। लेकिन धीरे-धीरे कला की उपेक्षा होने लगी परंतु मुगलों के आगमन के साथ ही इस क्षेत्र में नवजागरण आया। भारतीय और इरानी शैली के समन्वय से मुगलों ने एक नई शैली विकसित कि जिसे भारतीय मुगल कला का नाम दिया जाता है इस रैली में हिंदू-मुस्लिम परंपराओं और तत्वों का सुखद मिश्रण था।

मुख्य रेखांकित शब्द : स्थापत्य, तर्क, सांस्कृतिक, प्रांतीय, सम्मिश्रण, समन्वय संबंधी पोस्ट पोषक, वैभवपूर्ण, जौहरी तख्ताउस, पुरातत्ववेत्ता।

शोध प्रविधि

इस शोध आलेख लेखन के लिए विश्लेषणात्मक एवं ऋण आत्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है प्रस्तुत आलेख विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक प्रकृति का है इसके लिए मुख्य रूप से प्रार्थमिक एवं द्वितीयक स्रोतों को आधार बनाया गया है इसको मुख्य रूप से प्रकाशित ग्रंथ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं क्षणों आलेख प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोधकार्य इत्यादि को आधार बनाया गया है।

तथ्य विश्लेषण भारत में प्राचीन काल से ही कला स्थापत्य कला की विभिन्न शैली जैसे ब्राह्मण, बौद्ध, जैन आदि स्थापत्य कला की अत्यंत शैलियां प्रभावित हुई भारत में मुगलों का शासन काल काफी लंबा (१५२६ से १७०७) रहा है इस लंबे एवं शुद्ध शासनकाल में कला का अद्‌भुत विकास हुआ मुगल शासक कलाप्रेमी थे जिसकी पुष्टि उनके समय के कलाकृ तियों से होती है। मुगल काल में अनेक ऐसी भव्य इमारतों का निर्माण हुआ जो आज भी अपनी भव्यता एवं कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध है आज भी यह इमारते ऐतिहासिक महत्व की है जिन्हें देखने के लिए विश्वभर से ना केवल पुरातत्ववेत्ता अपितु पर्यटक भी आते हैं।

कला एवं विविध पक्षों में सर्वप्रथम चित्रकला का नाम आता है यह कला वास्तव में अकबर के समय से शुरू हुई वैसे बाबर को चित्रकला से भी लगाव था उस के शासनकाल में चित्रकला की एक नवीन शैली का जन्म हुआ जिसमें फारसी, चीनी एवं बौद्ध कला का मिश्रण था। बाबर ने अपने समय के अनेक प्रमुख चित्रकारों की भी प्रशंसा की है बाबर के समान हुमायूं भी चित्रकला में रुचि रखता था उस के समय की उल्लेखनीय कलाकृति दस्ताने अलहम जा नामक ग्रंथ है जिसे सैयद अली तथा ख्वाजा अब्दुल समद नामक चित्रकारों ने चित्रित किया था इन दोनों शासकों का अधिकतर समय विरोध से निपटने में व्यतीत हुआ अतः इस क्षेत्र में विशेष करने का मौका नहीं मिला अपने साम्राज्य को संगठित करने के पश्चात अकबर ने इसे विकसित करने का प्रयास किया उसने अपने दरबार में बड़े-बड़े चित्रकारों को संरक्षण प्रदान करना शुरू किया उसके उदार संरक्षण में अनेक देसी चित्रकारों में ख्वाजा अब्दुल समद एवं मीर सैयद अली जैसे चित्रकला का अपदकमगणीजउसययन किया और धीरे-धीरे उन्होंने इस कला की साधना करके श्रेष्ठता प्राप्त की। भारतीय चित्रकारों ने चित्रकला की नवीन शैली को जन्म दिया इस्लाम धर्म के कट्टर समर्थक चित्रकला के पक्ष में नहीं है किंतु

अकबर की उदार संरक्षण में इस कला को राज आश्रय प्रदान किया अब्दुल फजल अकबर के दरबार में १७ प्रसिद्ध चित्रकारों का वर्णन करता है। जिसमें सर्वप्रथम मीर सैयद अली ख्वाजा अब्दुल समद दसवंत और बसावन आदि हैं।
मुगलकालीन चित्रकारी रंग सज्जा में उनके द्वारा कपड़े पर चित्रांकन करना भारतीय परंपरा की विशेषता थी अकबर ने महाभारत का फारसी में अनुवाद करवाया तथा उसे चित्रित कर उसका नाम रज्जनामा रखा। तारीफ ए अल्फाज इसी समय चित्रित किया गया।
स्थापत्य कला की अपेक्षा जहांगीर का झुकाव चित्रकला की ओर अधिक था वह चित्रकला का संरक्षण ही नहीं अपितु स्वयम भी एक कुशल चित्रकार एवं चित्रकला का पाखी था जहांगीर ने अपनी आत्मकथा तुजुक ए जहांगीरी में लिखा है कि–
अपने संबंध में मैं यह कह सकता हूं कि चित्रकला के प्रति मेरी आसक्ति और विवेचना इस समय यहां तक पहुंच चुकी है कि जब किसी जीवित अथवा मृत चित्रकार द्वारा बनाया गया चित्र मेरे सम्मुख लाया जाता है तब मैं तुरंत यह बता देता हूं कि यह चित्र अमूल्य व्यक्ति का है।

उस के दरबारी चित्रकारों में अबुल हसन मोहम्मद मुराद तथा उस्ताद मंसूर के नाम अग्रगण्य है हिंदू चित्रकारों में विशन दास मनोहर गोवर्धन के नाम उल्लेखनीय है इस समय चित्रों में कल्पना के साथ वास्तविकता का सुंदर संयोग था प्राकृ तिक दृश्यों का स्वाभाविक चित्रण शिकार एवं युद्ध के दृश्यों का ऐसा चित्रण किया गया था कि चित्रकला सजीव दिखाई देता है वस्तुतः जहांगीर के शासनकाल को मुगल चित्रकला का स्वर्णिम काल माना जाता है दारा शिकोह को भी इस कला में अभिरुचि थी शाहजहां तथा औरंगजेब ने इस कला में कोई विशेष अभिरुचि नहीं दिखलाई पर्सी ब्राउन ने लिखा है कि–शाहजहाँ के गद्दी पर बैठने के साथ ही चित्रकला में पतन का युग आरम्भ हो गया।

संगीत एवं नृत्य पर आधारित प्रतिबंध के कारण मुगलों ने विशेष पदकमगणीजउसयान नहीं दिया लेकिन अकबर इसका अपवाद था वह स्वयं गायक था और संगीत कि उसने विधिवत शिक्षा प्राप्त की थी तानसेन उसके दरबार में चार चांद लगाते अर्थात शोभा बढ़ाते थे बाबा रामदास इस युग के महान गायक थे तानसेन के तानसेन के अतिरिक्त ३६ संगीतज्ञ रहते थे।
जहांगीर को अपने पिता के समान संगीत से प्रेम नहीं था फिर भी संगीत की परंपरा उसके दरबार में जारी रही उसके दरबार में प्रवेश जहांगीर दादू चतुर का आदि प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे। शाह जहां भी संगीतकारों को प्रश्रय देता था उसके समय जगन्नाथ मिर्जा जुलकरनैन लाल खान महिपाल रामदास सुख सेन आदि प्रमुख थे औरंगजेब ने संगीत पर प्रतिबंध लगा दिया।

मूर्तियों के निर्माण पर धार्मिक रोकती मनुष्य एवं ईश्वर की मूर्ति बनाना सर्वथा वर्जित था लेकिन अकबर ने इस निषेध को मानने से इनकार कर दिया। फतेहपुर सीकरी में हाथी पुल का निर्माण कराया हाथी पर चढ़े जयमल एवं पन्ना भी राष्ट्र मूर्तियों का निर्माण अकबर ने स्वयं करवाया। जहांगीर ने उदयपुर के राजा अमर सिंह और उसके पुत्र कर्ण सिंह की मूर्तियां बनवाई।
हस्तलेखन कला को मुगल सम्राटों के द्वारा प्रोत्साहित किया गया अकबर सुलेख लिखने वालों को प्रोत्साहन देता था इस शैली का सबसे प्रसिद्ध लेखक मोहम्मद हुसैन था जहांगीर शाहजहां और औरंगजेब की सुलेख के प्रेमी थे। औरंगजेब स्वयं इस कला में दक्ष था।
मृदभांड और धातु कला का एक साम्राज्य में काफी विकास हुआ मृदभांड का प्रयोग मुसलमान अधिक करते थे मिट्टी तथा धातु के सुंदर बरतन मूर्तियां खिलौने धूपदान आदि तैयार किए जाते थे।
सूती रेशमी वस्त्रों पर नक्काशी का काम मुगल काल की उल्लेखनीय उपलब्धि थी शाही दरबार की सजावट के लिए वस्त्रों पर विशेष रूप से कढ़ाई की जाती थी राजकीय परिवार के सदस्यों के वस्त्रों पर रंग और कढ़ाई का सुंदर संयोजन किया जाता था।

स्थापत्य कला–

ललित कलाओं के विकास की ओर मुगल बादशाहों ने विशेष पदकमगणीजउसयान दिया उनमें श्रेष्ठ स्थान स्थापत्य कला का है। बड़े-बड़े बूबे भवनों के निर्माण की लहृन्ग मस्जिदों बावरलियों आदि के निर्माण में मुगल शासकों की विशेष अभिरुचि दिखाई देती है। भारतीय कलाकारों के साथ-साथ देश विदेश की अनेक कलाकारों को बुलाकर मुगलों ने स्थापत्य कला के क्षेत्र में एक ऐसी शैली का विकास किया जिसमें फारसी और भारतीय दोनों तत्वों का मिश्रण था। वास्तव में मुगल स्थापत्य कला में हिंदू मुस्लिम संस्कृति के बीच समन्वय की भावना प्रदर्शित होती है।

बाबर द्वारा भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना किए जाने से स्थापत्य कला के क्षेत्र में एक नव युग का आरंभ हुआ इस शैली को मुगल स्थापत्य शैली तथा इंडो परशियन स्थापत्य शैली कहा जाता है इस शैली का संस्थापक बाबर था किंतु चरमोत्कर्ष पर शाहजहां के शासनकाल में पहुंचा। बाबर के समय की इमारतों में प्रमुख काबुली बाग मस्जिद पानीपत एवं संभल के जामा मस्जिद आगरा के किले प्रमुख हैं

अकबर का शासन कला की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है वह कला और कलाकारों का बड़ा आदर करता था उसकी महानता का प्रभाव तत्कालीन कला पर भी पड़ा वास्तव में मुगल स्थापत्य कला का विकास अकबर के समय से ही प्रारंभ होता है। उसके समय भी कला हिंदू एवं मुस्लिम शैलियों का मिश्रण थी इसी कारण प्रसिद्ध ब्राउन ने लिखा है–

अकबर कालीन कला शैली समन्वय योग तथा परिस्थितियों की उपज थी।

अकबर समन्यवादी था उसने अपने उद्देश्य और मस्तिष्क के भावों और विचारों को पत्थर और भारतीय और ईरानी शैली का सामंजस्य स्थापित किया आगरे के दुर्ग में जहांगीरी महल तथा फतेहपुर सीकरी के बहुत से इमारतों को देखने से ऐसा लगता है कि किसी राजपूत राजकुमार ने बनवाया है। फतेहपुर सीकरी में किसी राजपूत राजकुमार ने बनवाया है फतेहपुर सीकरी में किला नुमा एक विशाल नगर का निर्माण किया गया वहां की प्रसिद्ध भवनों में दीवाने आम दीवाने खास कोषागार भवन ज्योतिषियों की बैठक पंचमहल शेख सलीम चिश्ती का मकबरा बुलंद दरवाजा आदि प्रमुख हैं। दीवान-ए-खास एक वर्गाकार भवन था जिसमें बेटी हुई है तथा प्रत्येक कोण पर एक खंबे वाली छतरी है यह भवन सुसज्जित एवं कलात्मक है जोधाबाई महल पर हिंदू कलाकार स्पष्ट सांप दिखता है फतेहपुर सीकरी का सबसे प्रभावशाली भवन जामा मस्जिद था फर्गुसन ने इसे पत्थर में रोमांस की संज्ञा दी है।

जहांगीर को वास्तुकला की अपेक्षा चित्रकला एवं बाग-बगीचों से अधिक लगाव था फिर भी अकबर के समय में जो स्थापत्य कला का प्रभाव प्रारंभ हुआ उसके बैग में जहांगीर कि इस क्षेत्र की उदासीनता होते हुए भी कुछ प्रगति अवश्य हुई। उस के शासनकाल की वह प्रसिद्ध इमारतें हैं एक अकबर का मकबरा इसकी योजना अकबर ने स्वयं की थी और दूसरा एत्माद्दौला का मकबरा है जो संगमरमर का बना है जिसमें बहुमूल्य पत्थर जुड़े हुए हैं नूरजहां ने अपने पिता एत्माद्दौला की याद में आगरा में एक मकबरे का निर्माण करवाया जिसमें लाल पत्थर और संगमरमर की सुखद संयोग है।

शाहजहां स्थापत्य कला का सबसे बड़ा संरक्षक एवं पोस्ट को शक था उसका शासन काल स्थापत्य कला का स्वर्ण युग था डहृक्टर बनारसी प्रसाद सक्सेना ने लिखा है–

चाहे ऐतिहासिक साहित्य का समस्त खजाना नष्ट हो जाए और केवल वह भवन ही शाहजहां के शासनकाल की कहानी सुनाने के लिए शेष रह जाए तब भी इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है कि शाहजहां का शासनकाल सबसे अधिक वह पूर्ण कहां जाएगा।

उसकी इमारतों से ऐसा अनुभव होता है कि जैसे जौहरी और चित्रकार के कार्यों को पत्थर में जड़ दिया गया हो आगरा के किले में दीवाने आम दीवाने खास मच्छी भवन शीश महल खास महल झरोखा दर्शन मोती मस्जिद नगीना मस्जिद का निर्माण किया गया। यह शाहजहां के प्रमुख इमारतों में है इसके अतिरिक्त काबुल कश्मीर अजमेर अहमदाबाद आदि विभिन्न स्थानों में भी शाहजहां ने संगमरमर का का उपयोग प्रारंभ किया दूध की तरह सफेद संगमरमर से बनी हुई मोती मस्जिद अपने नाम मोती की तरह है।

शाहजहां ने तक का उसका निर्माण करवाया जिसमें कीमती हीरे और मोती जड़े हुए थे इनमें १२ छोटे-छोटे स्तंभ थे और उन पर दो-दो मोरों की आकृतियां थी।

दिल्ली की लाल किले की इमारत है उनमें पानी और फव्वारों का प्रबंध आदि इतना सुंदर था जैसा कि वहां एक स्थान पर लिखा है–

अगर फिरदौस बर रूए जमी अस्त

हमीं अस्त हमीं अस्त हमीं अस्त।

किंतु शाहजहां के काल की सबसे महान उपलब्धि आगरा का ताजमहल है ताजमहल स्थापित एवं वास्तुकला की कारीगरी का सर्वोत्कृष्ट नमूना फतेह शाहजहां का विश्व का सर्वश्रेष्ठ उपहार है परसों ब्राउन ने लिखा है।

जेम ज्ंर डींस पे ं उवदनउमदज ूपबी उंतो जीम चमतमिबज उवउमदज पद जीम मअवसनजपवद वि।तबीपजमबजनतम कनतपदह जीम डनहींस च्मतपवक

मुगल स्थापत्य कला का स्वर्ण युग शाहजहां के साथ ही समाप्त हो जाता है औरंगजेब के शासनकाल में ना तो भवनों की संख्या अधिक है ना बे इतने अधिक सुंदर है एवं सजीव हैं। औरंगजेब के शासन काल में निर्मित भवनों में लाहौर की बादशाही मस्जिद दिल्ली के लाल किले की मोती मस्जिद तथा औरंगाबाद में राबिया दुर्रानी का मकबरा उल्लेखनीय है।

मुगल शासकों ने भारत में उद्यान कला का विकास भी बड़े पैमाने पर किया बाबर ने आगरा में आराम बाग का निर्माण किया जहांगीर द्वारा कश्मीर की घाटी में अनेक बार लगवाए गए जिसके शालीमार बाग काफी प्रसिद्ध है शाहजहां ने कश्मीर में निशात बाग और चश्मा शाही उद्यान का निर्माण करवाया।

निष्कर्ष

इस तरह मुगल कला एवं स्थापत्य कला ने बाबर और हुमायूं की गोद में आंख खोली और अकबर और शाहजहां के संरक्षण में युवा वस्था को प्राप्त कर ताजमहल जैसी उच्चतम कलाकृति को जन्म दिया तत्पश्चात औरंगजेब किस समय तक आते–आते पतनोन्मुख हो चली कला और स्थापत्य कला की दृष्टि से मुगल काल भारतीय इतिहास का शानदार योग्यता साम्राज्य नष्ट हो गया किंतु मुगल शासकों द्वारा निर्मित भवनों की लोन मस्जिदों एवं अन्य कलाकृतियों के रूप में सुसज्जित उनकी देन आज भी उनकी गौरवशाली परंपरा की अद्वितीय धरोहर मानी जाती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- बिहारी, सिन्हा बिपिन(१९७८), *मुगल भारत* : ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ ५६०।
- फजल, अबुल : *आईने अकबरी* जिल्द तीन ब्लैक मैन तथा जैविक द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित, पृष्ठ संख्या ११४।
- रामनाथ (१९७६) : *मध्यकालीन भारतीय कला एवं उनका विकास*, नवरंग प्रकाशन कोलकाता पृष्ठ संख्या २०३।
- जहांगीर, तुजुक ए जहांगीरी, पृष्ठ संख्या २१३।
- ब्राउन, पर्सी (१९२४): *इंडियन पेंटिंग अंडर द मुगल सपोर्ट* पृ९ संख्या २१४।
- *आईने अकबरी,* भाग नंबर–१ द्वितीय संस्करण एच एस ग्रेड द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित, पृष्ठ संख्या ९६।
- वर्मा एच.सी (१९९६) मध्यकालीन भारत व हिंदी कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या ४१४।
- बिहारी, सिन्हा बिपिन (१९७८), *मुगल भारत,* ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या ५६९।
- इग्नू बुकलेट इ.एच.आई ०४ खंड ८ इकाई ३२.४५ पृष्ठ संख्या २५।
- इग्नू बुकलेट इ.एच.आई ०४ खंड ८ इकाई ३२.४५ पृष्ठ संख्या २५।
- हैवेल, ई. बी.(१९१३), *इंडियन आर्किटेक्चर फ्रहम द फर्स्ट मोहम्मडन इन्वेंशन टू द प्रेजेंट डे,* लंदन पृष्ठ संख्या २१५।
- बिहारी, सिन्हा बिपिन (१९७८) : *मुगल भारत ज्ञानदा प्रकाशन,* नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या ५५८।
- ब्राउन, पर्सी इंडियन (१९२४) : *आर्किटेक्चर इस्लामिक पीरियड अहक्सफोर्ड,* पृष्ठ संख्या १८२।

- जी, फर्गुसन (१८६५): *हिस्ट्री अहफ इंडियन एंड ईस्टर्न आर्किटेक्चर* लंदन, संख्या ३२४।
- पर्सी ब्राउन कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इंडिया खंड-४, लंदन पृ६ ५५३।
- प्रसाद, सक्सेना बनारसी (२००८) : *हिस्ट्री ऑफ शाहजहां दिल्ली प्रकाशन संस्थान,* नई दिल्ली, पृ६ १६५।
- रामनाथ, (१९७६): *मध्यकालीन भारतीय कलायें एवं उनका विकास* नवरंग प्रकाशन, कलकत्ता, पृ६१६६।
- चंद्र, सतीश(२००१) : *मध्यकालीन भारत जवाहर पब्लिकेशंस एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स,* नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या ३१२।
- ब्राउन पर्सी, (१६२४) *इंडियन आर्किटेक्चर इस्लामिक पीरियड अहक्सफोर्ड,* पृष्ठ संख्या २१५।
- बर्नियर, *ट्रेबल्स अहफ मुगल एंपायर,* अनुवाद कहन्स्टेबल पृष्ठ संख्या २२२।
- इग्नू बुकलेट इ.एच.आई ०४ खंड ८ इकाई ३४ पृष्ठ संख्या ७३।